

M.A. F.Y. (Hindi) (Choice Based) Regular Semester 2016 Sem I (New Course)
MAHNCBCS103 : Paper-III : Elective Course : Adhunik Hindi Kavya
(क) (आधुनिक हिन्दी काव्य)

P. Pages : 3

Time : Three Hours



GUG/W/16/8099

Max. Marks : 80

सूचना :- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं तीन की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।

30

- क) “मधुर विरक्ति भरी आकुलता
फिरती हृदय गगन में
अन्तर्दाह स्नेह का तब भी
होता उस दूर में।
वे असहाय नयन थे खलते
मुँदने उस भीषणता में
आज स्नेह का पात्र भरा था
स्पष्ट कुटिल कटुता में।”
- ख) “ज्यों होता है शरद् ऋतु के बीतने से हताशा,
स्वामी सेवी श्रतिशत तूषावान प्रेमी पपीहा
वैसे ही श्रीकुँवर - वर के द्वारिका में पधारे
छाई सारी ब्रज - श्रवनि में सर्वदेशी निराशा।।”
- ग) “मुझे भाग्यहीन की तू सम्बल
युग वर्ष बाद जब कई विकल,
दुःख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।”
- घ) “देख मुझको मैं गढ़ा,
डेढ़ बालिश और उँचे पर चढ़ा
और अपने से उगा मैं,
बिना दाने का चुगा मैं।
कलम मेरा नहीं लगता,
मेरा जीवन आप जगता।”
- च) प्यास तुझे तो विश्व तपाकर
पूर्ण निकालूँगा हाला,
एक पाँव से साकी बनकर
नाचूँगा लेकर प्याला;
- छ) इस सिरे से उस सिके तक सब सरिके जूरम है,
आदमी या तो जमानत पर रिहा है या फरार
हालते इन्सान पर बरहम ना हो प्यारे
अहेते बेरहम वतन,

- *****

munotes.in